SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारत में ई–संसाधन और उच्च शिक्षा का एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन

रूचि भाटिया, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
डी.ए.वी.पी.जी. कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
रूचि भाटिया

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 08/06/2023
Revised on : -----
Accepted on : 15/06/2023
Plagiarism : 05% on 08/06/2023

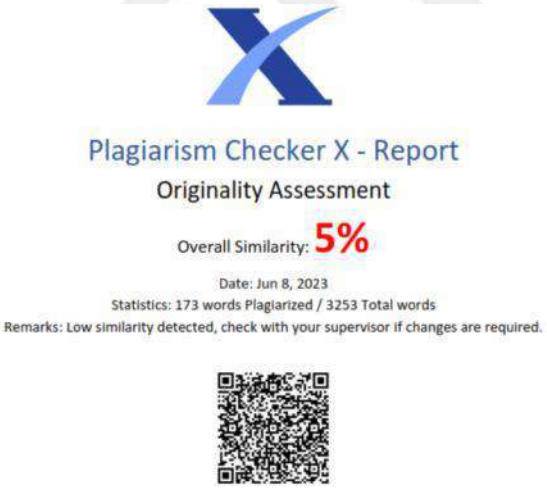

शोध सार

विज्ञान, वाणिज्य और कला के विभिन्न विषयों में पिछले कुछ वर्षों में उच्च शिक्षा प्रणाली तेजी से बढ़ी है। ई–संसाधनों और सूचना प्रौद्योगिकी ने भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली में तेजी से बदलाव लाए हैं। ई–संसाधन शिक्षण–अधिगम और अनुसंधान के लिए मूल्यवान उपकरण हैं। यह शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करने में उच्च शिक्षा का सहायक स्तंभ है। शिक्षा और अनुसंधान में ई–संसाधनों तक पहुँचने के लिए वेबसाइट और इंटरनेट सेवाएँ महत्वपूर्ण उपकरण हैं। आईसीटी के इस युग में अकादमिक पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों ने वैश्विक सूचना वातावरण को तेजी से बदल दिया है। भारत में विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थान और केंद्र ई–संसाधनों की सदस्यता ले रहे हैं। भारतीय प्रणालियों ने उपयोगकर्ता की आवश्यकता को पूरा करने के लिए ई–संसाधनों की सदस्यता लेना शुरू कर दिया है। इस शोध पत्र में उच्च शिक्षा के लिए अपनी गति से अधिक सीखने के लिए एक सशक्त और सक्षम वातावरण का अनुकरण दिया गया है। यह अध्ययन ई–संसाधनों के अवसरों और चुनौतियों की झलक दिखाता है जिन्हें कहीं से भी और कभी भी उपलब्ध कराया जा सकता है। शिक्षा की उच्च गुणवत्ता और ई–संसाधन के उपयोग में सुधार के लिए अनुसंधान उच्च शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक है।

मुख्य शब्द

ई–संसाधन, शिक्षा, समाज.

प्रस्तावना

एक ई–संसाधन या इलेक्ट्रॉनिक संसाधन को ऐसे संसाधन के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके लिए कंप्यूटर परिग्रहण या किसी इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद की आवश्यकता होती है जो डेटा का संग्रह प्रदान करता है। चाहे वह पाठ हो, पूर्ण पाठ आधार, ई–पत्रिका या अन्य

मल्टीमीडिया उत्पादों और संख्यात्मक, ग्राफिकल या समय आधारित व्यावसायिक रूप से उपलब्ध हो जिसे विपणन के उद्देश्य से प्रकाशित किया गया है। इन्हें पेन ड्राइव पर, टेप पर, इंटरनेट आदि के माध्यम से डिलीवर किया जा सकता है। पिछले कुछ वर्षों में, कई तकनीकों और संबंधित मानकों का विकास और उपयोग किया गया है जो दस्तावेजों को इलेक्ट्रॉनिक रूप में बनाने और वितरित करने की अनुमति देते हैं, इसलिए वर्तमान स्थिति से निपटने के लिए, पुस्तकालयाध्यक्ष अपने संग्रह के विकास के लिए नए विचारों, अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की ओर बढ़ रहे हैं ताकि उपयोगकर्ताओं की आवश्यकता को बेहतर ढंग से पूरा किया जा सके, क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में पुस्तकालय का विशेष स्थान होता है। पुस्तकालय शिक्षा व्यवस्था का एक क्रियाशील एवं महत्वपूर्ण अंग है। सदियों से सृजित ज्ञान पुस्तकालय को संग्रहित ज्ञान का भंडार कहा जाय तो अतिश्योक्ति नही होगी। पिछले कुछ दशको में कंप्यूटर द्वारा जानकारी एकत्रित की जा रही है, इन्टरनेट वेब लगातार संचार के साधनों के विकास को प्रभावित कर रहे है। महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय संस्थानों में ई–संसाधनों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वर्तमान युग सूचना युग हैं, प्रत्येक व्यक्ति विश्वसनीय और सही जानकारी पुस्तकालयों और सूचना केन्द्रों से मिलने की उम्मीद रखता हैं। भारत में पुस्तकालय द्वारा इस नई जानकारी के लिए इन चुनौतियो को स्वीकार करने के लिए स्वयं को तैयार कर रहे है। बहुत से पुस्तकालय डिजिटल और नेटवर्क की जानकारी काफी समय से उपयोग में ला रहे है। आज पुस्तकालय परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं हैं। इस कारण पिछले कुछ दशकों ने अर्थात् कोविड–19 के प्रकोप ने पूरे परिदृश्य को बदल दिया है। आज सीडी रोम, मल्टीमीडिया, इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन, ऑनलाइन पत्रिकाएँ अधिक गति से लोकपिय्र हो रहे हैं। नए–नए प्रकाशन उभर कर सामने आ रहे हैं। इस क्रांति को जन्म दिया कम्प्यूटर विज्ञान और प्रकाशकीय तंत्र ने जो विश्व के राष्ट्रों को अधिक समीप लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहें है। पुस्तकालयों मे नेटवर्किंग की जरूरत हैं, क्योंकि एक राष्ट्र की प्रौद्योगिकी मानव और भौतिक संसाधनो पर निर्भर करती है। ई–संसाधनों को आसानी से गुगल जैसे खोज इंजन के माध्यम से उपलब्ध कर सकते हैं। ई–संसाधन पुस्तकालय उपयोगकर्ताओ के लिए स्वतंत्र माध्यम हैं। आज एक विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों में ई–संसाधनो की उपलब्धता बहुत आम है। अगर पिछले कुछ समय से शिक्षको और शोधार्थियो के बीच ऑनलाइन संसाधनो की प्राथमिकताओ और विचारो पर प्रकाश डाला जाए तो पिछले कुछ दशको के दौरान कम्प्यूटर के उपयोग में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया हैं जो संचार के नए तरीके एवं विकास को प्रभावित कर रहे हैं।

भारत में उच्च शिक्षा

संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी है। सर्वोच्च स्तर पर मुख्य शासी निकाय यू.जी.सी., या विश्वविद्यालय अनुदान आयोग है, जो इसके मानकों को लागू करता है, सरकार को सलाह देता है, और केंद्र और राज्य के बीच समन्वय में मदद करता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा स्थापित 15 स्वायत्त संस्थानों द्वारा उच्च शिक्षा के लिए प्रत्यायन की देखरेख की जाती है। चूँकि शिक्षा मन का प्रशिक्षण और आत्माओं का प्रशिक्षण दोनों है, इसलिए इसे विवेक और ज्ञान दोनों देना चाहिए। जब तक उनमें कुछ जागृत नहीं होगा, तब तक कोई भी तथ्यात्मक जानकारी शिक्षित पुरुषों में सामान्य रूप से नहीं होगी इसलिए बुद्धि और ज्ञान का धारण करना चाहिए। हमारी शिक्षा प्रणाली को अपने मार्गदर्शक सिद्धांत को उस सामाजिक व्यवस्था के उद्देश्यों में खोजना चाहिए जिसके लिए वह तैयार करती है। जब तक हम लोकतंत्र, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों को संरक्षित नहीं करते, तब तक हम अपनी स्वतंत्रता को संरक्षित नहीं रख सकते। किसी देश की महानता उसके क्षेत्र की सीमा, उसके संचार की लंबाई या उसके धन की मात्रा पर निर्भर नहीं करती है, बल्कि जीवन के उच्च मूल्यों के प्रति प्रेम पर निर्भर करती है। हमें गरीबों और कष्टों के लिए विचार, महिलाओं के लिए सम्मान और सम्मान, जाति, रंग, धर्म आदि की परवाह किए बिना भाईचारे में विश्वास विकसित करना चाहिए। उच्च शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य पेशे और सार्वजनिक जीवन में नेतृत्व के लिए प्रशिक्षण है। बुद्धिमान नेतृत्व के लिए पुरुषों और महिलाओं को प्रशिक्षित करना विश्वविद्यालयों का कार्य है।

भारत में पहले ई–संसाधन और उच्च शिक्षा प्रणाली से संबंधित सभी जानकारी एकत्र करना और फिर भारत में उच्च शिक्षा में ई–संसाधन के उपयोग का पता लगाना। फिर सभी दस्तावेज़ों का विश्लेषण करें और सभी सूचनाओं

की एक दूसरे से तुलना करें और फिर अवलोकन, चुनौतियाँ और सुझाव खोजें और यह भी मूल्यांकन किया कि एकत्रित जानकारी कितनी उपयोगी है। फिर कुछ बिंदु बनाए कि हम उस पर काम करते हैं और उचित कारण के साथ प्रत्येक बिंदु की व्याख्या और मूल्यांकन करते हैं जो भारत में ई–संसाधन और उच्च शिक्षा पर हमारे शोध कार्य को समझने में मदद कर सकता है।

भारत में उच्च शिक्षा का अवलोकन

भारत सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और दुनिया में बड़ी संख्या में उच्च शिक्षा संस्थान हैं। छात्र आबादी में भारत का विश्व में तीसरा स्थान है। एक सर्वेक्षण में यह देखा गया था कि भारत में 18000 से अधिक संस्थान हैं और 11 मिलियन से अधिक छात्रों की संख्या है। उस 18000 संस्थान में कुछ सरकार द्वारा चलाए जाते हैं और कुछ निजी हैं और उनमें से कई सरकारी सहायता प्राप्त हैं। 1990 के बाद से भारत में शैक्षिक संस्थानों की वृद्धि 10.5 प्रतिशत तक बढ़ गई है। कुछ संस्थान 6 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक दर से बढ़ रहे हैं। उच्च शिक्षा की वृद्धि या मांग के कारण संस्थानों के विकास की दर भी बढ़ जाती है। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह देखी गई कि अच्छी गुणवत्ता वाले संस्थानों की वृद्धि नगण्य रही है। नतीजतन, भारतीय उच्च शिक्षा को अक्सर औसत दर्जे के समुद्र के रूप में चित्रित किया गया है जिसमें उत्कृष्टता के केवल कुछ द्वीप शामिल हैं। भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली के सामने प्रमुख समस्या समानता और गुणवत्ता थी। यह समस्या प्रणाली की दो प्राथमिक बाधाओं से संबंधित है, वे हैं, पहली, उच्च शिक्षा में सार्वजनिक निवेश की गिरावट और दूसरी, एक प्रवाहित, अत्यधिक कठोर और अप्रभावी नियामक, ढांचे का अस्तित्व। हालांकि विदेशी प्रतिभागी विभिन्न क्षेत्रों में एक संभावित भूमिका निभाते हैं लेकिन समग्र रूप से नहीं।

पारंपरिक उच्च शिक्षा

पारंपरिक उच्च शिक्षा प्रणाली को शिक्षा की पारंपरिक पद्धति के रूप में भी जाना जाता है। इस पारंपरिक पद्धति का मुख्य उद्देश्य भविष्य की पीढ़ी के लिए मूल्यों, शिष्टाचार कौशल और सामाजिक अभ्यास को बनाए रखना है। इस प्रणाली में छात्र समाज के रीति–रिवाजों और परंपराओं के बारे में सीखते हैं। यह मौखिक प्रतिक्रिया में सुधार करने में मदद करता है और लिखित कार्य और व्यावहारिक कार्य बहुत कम होता है। इसमें केवल मौखिक परीक्षा शामिल हो सकती है, कोई विशेष लिखित या प्रायोगिक परीक्षा नहीं। पारंपरिक उच्च शिक्षा प्रणाली विज्ञान और प्रौद्योगिकी से बहुत दूर है। इसमें रीति–रिवाजों, परंपराओं और धर्मों के बारे में ज्ञान शामिल हो सकता है।

आधुनिक उच्च शिक्षा

आधुनिक उच्च शिक्षा प्रणाली पारंपरिक उच्च शिक्षा प्रणाली से पूरी तरह अलग है। आधुनिक उच्च शिक्षा लेखन और व्यावहारिक कौशल और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में इसके उपयोग को बढ़ाने में मदद करती है। इसमें लेखन, विज़ुअलाइज़ेशन, सोच कौशल और कल्पना कौशल शामिल हैं। यह लोगों को लिखित और व्यावहारिक परीक्षा द्वारा सीखने के उचित तरीके की जांच करने में मदद करता है। आधुनिक उच्च शिक्षा प्रणाली में इंटरएक्टिव शिक्षण पद्धति का उपयोग किया जा सकता है। आधुनिक उच्च शिक्षा प्रणाली पारंपरिक उच्च शिक्षा प्रणाली का अनुकरण है। पारंपरिक और आधुनिक उच्च शिक्षा, दोनों एक दूसरे से संबंधित हैं, हालांकि दोनों एक दूसरे से अलग हैं। लेकिन हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आधुनिक उच्च शिक्षा पारंपरिक उच्च शिक्षा प्रणाली का उन्नयन है। यहाँ दो प्रणालियों के बीच कुछ तुलनाएँ हैं,

शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य अतीत से बिल्कुल अलग है। उस समय आधुनिक उच्च शिक्षा को अच्छा नहीं माना जाता था और आज पारंपरिक को पर्याप्त नहीं माना जाता है। शिक्षा की आवश्यकता के कारण पारंपरिक उच्च शिक्षा प्रणाली बदल गई है और आधुनिक उच्च शिक्षा प्रणाली में अचानक बदल रही है और इसे धीरे–धीरे लोगों द्वारा स्वीकार किया जा रहा है। पहले के समय में लोग अपने बच्चों को शिक्षा की जरूरत को पूरा करने के तरीके सिखाते थे, लेकिन केवल चीजें ही लोगों की जरूरत को बदलती हैं। गुजरते समय के साथ लोगों की जरूरत बढ़ती गई, शिक्षा का विकास होता गया। यदि शिक्षा का विकास नहीं होता तो आज के युग में आवश्यकताओं की पूर्ति करना

कठिन हो जाता। आजकल हम सभी वाशिंग मशीन, लाइट, पंखे, कार और फ्रिज आदि का उपयोग करते हैं। यदि शिक्षा में सुधार नहीं किया गया होता तो ये सभी वस्तुएं कभी मौजूद नहीं होती इसलिए नियमित दिनों में ज्ञान बढ़ाने के लिए उच्च शिक्षा के विकास की आवश्यकता है।

पारंपरिक उच्च शिक्षा में, छात्र परंपराओं, रीति–रिवाजों और धर्मों के बारे में सीखते हैं। आधुनिक उच्च शिक्षा में छात्रों को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, भाषा कौशल और गणित आदि के बारे में पढ़ाया जाता है, पारंपरिक उच्च शिक्षा प्रणाली में प्रदान किया जाने वाला ज्ञान। खुद के जीवन के लिए इतना काफी था लेकिन पूरी दुनिया की बराबरी करने के लिए यह काफी नहीं है। ज्ञान के विकास के लिए हमेशा उचित शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता होती है। यदि शिक्षा व्यवस्था को दुरुस्त नहीं किया गया तो आधुनिक दिनों में उच्च शिक्षा को ठीक से प्रभावित नहीं किया जा सकता है। आधुनिक उच्च शिक्षा प्रणाली की शिक्षण पद्धति पारंपरिक उच्च शिक्षा प्रणाली से पूरी तरह अलग है। यह अधिक समझ और दिलचस्पी है। यह छात्र को बहुत जल्दी और आसानी से और विभिन्न तकनीकों के साथ सब कुछ समझने में मदद करता है।

भारत में उच्च शिक्षा पर ई–संसाधनों का प्रभाव

भारत में आईसीटी ने उच्च शिक्षा में तेजी से बदलाव किए हैं। भारत की पारंपरिक शिक्षण और सीखने की पद्धति ऑनलाइन की ओर बढ़ रही है। आईसीटी आधारित पुस्तकालय जैसे आभासी पुस्तकालय, इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकालय और डिजिटल पुस्तकालय वर्तमान स्थिति में आ गए। विभिन्न उच्च शैक्षिक संस्थान पेशेवर पारंपरिक पद्धति से आधुनिक पद्धति की ओर संसाधन एकत्र करने के लिए आगे बढ़ते हैं। पारंपरिक सूचना संसाधनों पर इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों के कई फायदे हैं। शिक्षण और सीखने के लिए, कई छात्रों, विद्वानों, शिक्षकों ने इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों और वेब सामग्री का उपयोग किया। हाल के वर्ष में प्रकाशक अपने दस्तावेज़ को ई–प्रकाशन प्रारूप में भी प्रकाशित कर सकते हैं। पाठकों की संख्या में बदलाव, उपयोगकर्ता की अपेक्षाओं में बदलाव, प्रकाशन लागत, अधिकार प्रबंधन और संग्रह जैसे कई मुद्दों में प्रकाशक की रुचि है। वर्तमान समय में भारत में प्रत्येक शोधकर्ता और विद्वान ई–संसाधन चाहते हैं क्योंकि उस उद्देश्य के लिए कभी भी और कहीं भी आसानी से उपलब्ध हैं, कई लेखक और कॉर्पोरेट निकाय अपने दस्तावेज़ को इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में प्रकाशित करते हैं। शोधकर्ता एक सूचना स्थान में पूर्ण पाठ प्रकाशन और संदर्भ लिंकिंग तक आसान पहुँच प्राप्त करना पसंद करते हैं। आईसीटी के इस युग में अकादमिक पुस्तकालयों और भारत के सूचना केंद्र ने सूचना वातावरण को मौलिक रूप से बदल दिया है। उपयोगकर्ता की आवश्यकता को पूरा करने के लिए शैक्षणिक पुस्तकालय और उच्च शिक्षा संस्थानों ने ई–संसाधनों की सदस्यता लेना शुरू कर दिया है। ई–संसाधनों की शिक्षा, सूचना, अनुसंधान एवं विकास तथा सूचना प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण भूमिका होने के कारण वर्तमान कार्य में भारत में उच्च शिक्षा एवं शैक्षणिक कार्यक्रम पर ई–संसाधनों के प्रभाव को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

उच्च शिक्षा के आधुनिक साधन

गूगल डॉक्स जैसे क्लाउड टूल अपने विश्वसनीय उपयोग के कारण छात्रों के लिए पूरी तरह से फिट हैं, और यह कहीं भी स्थित छात्रों और शिक्षकों के साथ वास्तविक समय सहयोग की अनुमति देता है। नए गूगल वर्कफ़्लोज़ ने शिक्षकों के लिए उच्च शिक्षा को आसान बना दिया है। यह क्लाउड में टेम्प्लेट बनाने में मदद करता है इसलिए फ़ॉर्मेटिंग अंतिम नहीं है। गूगल डॉक्स विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री तक आसानी से पहुँचने में मदद करता है। गूगल डॉक्स का उपयोग करके छात्र किसी भी परियोजना को आसानी से पूरा करने में अधिक प्रभावी होंगे। उच्च शिक्षा कक्षाओं में आभासी वास्तविकता अधिक प्रभावी है, यह प्रभावशाली सीखने के लिए बहुत सारी संभावनाएं प्रदान करती है। यह मेडिकल छात्रों के लिए अधिक उपयोगी है, एनाटोमाइज टेबल वर्चुअल कैडर्स बनाता है जो कौशल को एक सुरक्षित वातावरण में बार–बार अभ्यास करने की अनुमति देता है। वीआर का उपयोग करने वाले इन कार्यक्रमों में शिक्षक विज्ञान के क्षेत्र से बाहर के अनुभव में मदद कर सकते हैं। आभासी वास्तविकता छात्रों को बॉक्स–वीआर के बाहर सोचने में मदद करती है, इसका उपयोग कला संग्रहालयों में आभासी अनुभवों को देखने के लिए भी किया जाता है। कॉलेज और विश्वविद्यालयों की कक्षाओं पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा है। इसके लिए कैमरा

और एचडी डिस्प्ले के साथ आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत है। यह ज्यादातर ग्रामीण कॉलेजों द्वारा उपयोग किया जाता है और दूरस्थ प्रोफेसरों को लाने और सीखने के विविध अवसरों की पेशकश करने में सक्षम है। यह दूरस्थ शिक्षकों के लिए मददगार है और यह कक्षाओं के संसाधनों तक उनकी पहुंच को भी बढ़ाता है। एमओओसी या बड़े पैमाने पर खुले ऑनलाइन पाठ्यक्रम ऑनलाइन पाठ्यक्रम हैं जो छात्रों को व्याख्यान, वीडियो, पठन सामग्री जैसे शिक्षण के पारंपरिक तरीकों के अलावा उनकी पसंद के किसी भी पाठ्यक्रम में मुफ्त पहुंच और अप्रतिबंधित भागीदारी की अनुमति देते हैं। यह परस्पर संवादात्मक मंचों के लिए एक मंच भी प्रदान करता है।

ई–संसाधन का भविष्य में उपयोग

भविष्य में सूचना की आवश्यकता बढ़ने के कारण ई–संसाधनों की सदस्यता एवं प्रकाशन में भी वृद्धि हुई है। भविष्य में, सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों के तेजी से विकास और विशेष रूप से इंटरनेट और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों ने विद्वानों की जानकारी के अनुसंधान, भंडारण, पुनर्प्राप्ति और संचार की पारंपरिक पद्धति को बदल दिया है। हालांकि इसमें अभी भी थोड़ा संदेह है कि ई–संसाधनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और संकाय सदस्यों के लिए सूचना मांगने और प्रसारित करने के तरीके को बदल दिया है। इलेक्ट्रॉनिक वातावरण में ई–संसाधनों का उपयोग इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में अधिक आसानी से उपलब्ध हो जाता है। इस वातावरण में, ये संसाधन कई रोमांचक अवसरों को खोलते हैं और पहले ही पुस्तकालय दर्शन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला चुके हैं। भविष्य में ई–संसाधन वर्तमान एवं अद्यतन सूचना प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है। भारत के पुस्तकालय और उच्च शिक्षा के माहौल में वर्तमान में संग्रह और सेवाओं के मामले में भारी बदलाव आया है। ई–संसाधनों के प्रसार का अकादमिक समुदाय के स्टोर और सूचनाओं को संरक्षित करने के तरीके पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। ई–संसाधनों के लाभों ने काफी हद तक पुस्तकालय उपयोक्ताओं का ध्यान आकर्षित किया है। तदनुसार, इन संसाधनों ने लगभग सभी पुस्तकालयों के संग्रह और बजट में एक महत्वपूर्ण स्थान पर कब्जा कर लिया है।

उच्च शिक्षा में ई–संसाधनों के सामने आने वाली चुनौतियाँ

शिक्षण और सीखने के मामले में शिक्षक और छात्र के सामने आने वाली चुनौतियाँ इस प्रकार हैं:

धन की कमी: बुनियादी ढांचे के निर्माण और रखरखाव और सेवाओं को जारी रखने के लिए आईसीटी को अधिक धन की आवश्यकता है। अधिकांश शैक्षणिक संस्थानों और पुस्तकालयों के पास ई–संसाधनों को रखने के लिए अपर्याप्त धन है और इसलिए उपयोक्ताओं को उनकी जानकारी सही समय पर नहीं मिल पाती है।

तकनीकी अवसंरचना: डिजिटल सूचना युग में, अवसंरचना बेहद महत्वपूर्ण है जैसे कि सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर, इंटरनेट सुविधाएं और अन्य भौतिक उपकरण और सूचना तक आसान और तेज पहुंच प्रदान करने के लिए और भी बहुत कुछ आवश्यक है। सर्वर के संदर्भ में अस्थिर तकनीकी नेटवर्क इन्फ्रास्ट्रक्चर के कारण, भौतिक केबलिंग और वायरलेस एक्सेस पॉइंट उच्च शिक्षा संस्थान के लिए चुनौतियां हैं।

पेशेवर कौशल की कमी: सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर, इंटरनेट और अन्य भौतिक उपकरणों को संभालने के लिए उचित प्रशिक्षित पेशेवर की जरूरत है। इनका काम ई–रिसोर्स को स्टोर और रिट्रीव करना होगा इसलिए, उच्च शिक्षा संस्थान और पुस्तकालय की स्थापना या संचालन कर सकने वाले पेशेवर कुशल कर्मियों की कमी उनके लिए चुनौती है।

गोपनीयता: गोपनीयता और गोपनीयता बनाए रखना ऑनलाइन जानकारी तक पहुँचने में एक और समस्या है। एक समय में किसी भी ई–संसाधन की सभी सामग्री को कॉपी या डाउनलोड करने वाले सॉफ़्टवेयर की चोरी को नियंत्रित करने के लिए, सूचना प्राप्त करने का अधिकार और पहुंच को रोकने या प्रतिबंधित करने का अधिकार आवश्यक है और इसलिए गोपनीयता और सूचना के अधिकार के बीच एक नाजुक चुनौती है। सूचना की गोपनीयता बनाए रखने के लिए एक नेटवर्क को दूसरे से सुरक्षित रखना इंटरनेट और इंट्रानेट पर डेटाबेस को सुरक्षित करने में एक और समस्या है।

ई–संसाधन का नियंत्रण: सामग्री एकत्र करना और इसे सभी वर्तमान और भविष्य के उपयोगकर्ताओं के

लिए उपलब्ध कराना। वर्तमान और भविष्य में उपयोगकर्ताओं के लिए इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के अधिग्रहण और प्रावधान को कवर करने वाली यथार्थवादी संग्रह–विकास नीतियों को स्थापित करने के लिए उच्च शिक्षा संस्थान के लिए चुनौती है।

निष्कर्ष

आजकल तकनीक उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा अध्ययन के तरीकों को बदल रही है। आईसीटी का उपयोग विषय क्षेत्र के पाठ्यक्रम के संदर्भ में और समग्र सूचना एकत्र करने की प्रक्रिया में सिखाया जा रहा है। कुछ चिंतित अवलोकन है कि जो छात्र प्रौद्योगिकी को एक उपकरण के रूप में उपयोग करते हैं, वे जानकारी एकत्र करने और प्रबंधित करने, संवाद करने और विचारों को प्रस्तुत करने में बेहतर हो सकते हैं। विभिन्न विषयों में कई व्यावसायिक डेटाबेस इलेक्ट्रॉनिक रूपों में उपलब्ध हैं। उपयोगकर्ता ई–लर्निंग के माध्यम से सटीक उपयोगी जानकारी प्राप्त कर सकता है। यह पुस्तकालयों की विभिन्न सेवाओं के आधुनिकीकरण के लिए उपयोगी है। शिक्षण और अनुसंधान पर ई–संसाधनों का प्रभाव काफी हद तक प्रौद्योगिकी पर नहीं, बल्कि व्यक्ति या कोई उपयोगकर्ता इसका उपयोग कैसे करता है, इस पर निर्भर करता है। संकायों और ई–संसाधनों के इष्टतम उपयोग के बीच गठजोड़ पर अनुसंधान का भविष्य ठीक यहीं निहित है। इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि कंप्यूटर सिस्टम की बढ़ती उपलब्धता और इंटरनेट की गति की पर्याप्तता ई–संसाधनों के उपयोग को अधिक प्रभावी और कुशलता से बढ़ा सकती है। यदि हम पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में देखें तो हम कह सकते हैं कि पुस्तकालय व्यवसायियों को अपने उपयोक्ताओं को ई–संसाधनों के स्पष्ट प्रभाव तथा आधुनिक समय के अध्ययन एवं शोधों पर उनके महत्व के बारे में प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि यह एक ठोस आधार तैयार कर सके। एक डिजिटल सीखने का माहौल और उपयोगकर्ताओं को अधिकतम सुविधाएं प्रदान करना और बिना ज्यादा समय बर्बाद किए सही समय पर सही जानकारी के साथ उन्हें संतुष्ट करने के लिए सर्वोत्तम सेवा प्रदान करना ही पुस्तकालय के मुख्य लक्ष्य होना चाहिये।

संदर्भ सूची

1. https://www.ugc.ac.in/oldpdf/consolidated%20list%20of%20All%20universities.pdf
2. https://www.researchgate.net/publication/327832125_Issues_and_Challenges_in_E-Resource_Management_-_An_Overview/link/5bb9a5834585159e8d87ae47/download
3. https://www.researchgate.net/figure/Recommendations-on-ways-to-improve-accessibility-and-utilization-of-e-resources-at_tbl2_26539939
4. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/120460/9/10_chapter%205.pdf
5. https://www.infoprolearning.com/blog/advantages-and-disadvantages-of-moocs-massive-open-online-courses-for-learning/
6. https://edtechmagazine.com/higher/article/2018/03/5-technology-tools-higher-education-classroom-perfcon
7. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/66829/10/10_chapter%203.pdf
8. https://en.wikipedia.org/wiki/Higher_education_in_India
9. http://www.lisbdnet.com/definition-and-types-of-e-resources/
10. http://www.yourarticlelibrary.com/education/4-major-objectives-of-higher-education-in-india/45182
11. http://www.lisbdnet.com/impact-of-e-resources/
12. https://www.researchgate.net/publication/325086708_Use_of_EResources_in_higher_education_Advantages_and_Concerns

****